नोट -

1. नवीन छात्रों की उच्चारण शुद्धि हेतु अमरकोष पढ़ाएँ (समयानुसार)।
2. वेदमन्त्रों की अक्षुण्ण परम्परा को बनाए रखने हेतु प्रत्येक छात्र का उच्चारण एवं स्वर शुद्ध हो इसका विशेष ध्यान रखते हुए छात्रों को उच्चारण स्थान इत्यादि से परिचित कराये।
3. नवीन छात्रों से उनका गोत्र, शाखा इत्यादि ज्ञात कर उसको स्वशाखाध्ययन कराने का प्रयत्न करें।
4. प्रत्येक वर्ष के पाठ्यक्रम का गुरुमुख से सम्पूर्ण अध्यापन एवं स्वाध्याय पूर्वक कण्ठस्थीकरण उसी वर्ष में पूर्ण करना अनिवार्य है।
5. छात्रों को परम्परागत सस्वर अध्ययन पद्धति से ही वेद अध्यापन कराना अनिवार्य है। जैसे -

   16 सन्था पद्धति

   अथवा

   10 पाठ

   10 वल्लि/दशावृत्ति/सन्था
6. प्रत्येक माह के अन्त में (पढाये गए विषयों की) मासिक परीक्षा कर छात्रों के कण्ठस्थीकरण, उच्चारण आदि की स्थिति का अवलोकन करें। यदि न्यूनता हो तो पूर्ण करें।
7. छात्रों की उच्चारण शुद्धि एवं ज्ञानवर्धन के लिए प्रतिदिन प्रातः एवं सायं सन्ध्या के पश्चात् विष्णुसहस्त्रनाम, महिषासुरमर्दिनी स्तोत्रम्, दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम्, अन्नपूर्णास्तोत्रम्, भजगोविन्दम्, प्रज्ञाविवर्धनस्तोत्रम्, रामरक्षास्तोत्रम् इत्यादि स्तोत्रों का समयानुसार अभ्यास एवं पाठ करें, जिससे भारतीय परम्परा में श्रद्धा एवं उत्साह बना रहें।
8. गतवर्षों का पाठ्यक्रम छात्र को कण्ठस्थ है या नहीं ज्ञात करने हेतु परीक्षण (Assessment) किया जाएगा।
9. परीक्षक को विगत सभी वर्षों के पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछने का पूर्ण अधिकार होगा।
10. सस्वर वेदाध्ययन करने वालों की संख्या शनैः शनैः क्षीण हो रही है। अतः श्रद्धावान्, मेधावान् एवं दार्ढ्य बुद्धि वाले छात्रों की वेदाध्ययन में रुचि उत्पन्न करने हेतु आवश्यक प्रयत्न करना।

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

ऋग्वेद शाकल शाखा पाठ्यक्रम

वेदभूषण प्रथमवर्ष (प्रथमा प्रथमवर्ष / कक्षा VI समकक्ष)

त्रिकालसन्ध्यावन्दन, अग्निकार्य (समिदाधान), ब्रह्मयज्ञ, भोजनविधि, अभिवादन, यज्ञोपवीत धारण विधि (गोत्र, प्रवर (ऋषि), शाखा, सूत्र इत्यादि)। पाणिनीय शिक्षा।

ऋग्वेद संहिता	अष्टक	अध्याय	वर्ग	मन्त्र
	6	7 (16 वर्ग से) 8	57	318

क्रमांक	माह / पक्ष	पाठ्यक्रम बिन्दु	मन्त्र संख्या	अंक	अध्ययन-अध्यापन
1	प्रथम	त्रिकालसन्ध्यावन्दन, अग्निकार्य (समिधादान), ब्रह्मयज्ञ		15	ऋग्वेद में प्रान्ताऽनुसार दो अलग-अलग अध्ययन अध्यापन पद्धतियाँ है। (प्रान्ताऽनुसार अनुसरण करें।) 1. 10 पाठ, 10 वल्लि/ दशावृत्ति/ सन्था 2. 4 पाद सन्था 4 अर्धऋक् सन्था 4 मन्त्र सन्था 4 वर्ग सन्था (गुण्डिका) 3. वल्लि/दशावृत्ति/सन्था सम्पूर्ण होने के पश्चात गुरुजी के सम्मुख (एकावृत्ति) कण्ठस्थ बोले। 4. नये पाठ की (जिसकी वल्लि/दशावृत्ति/ सन्था पूरी हुई हो।) एक वर्ग को 2-2 बार बोलते हुए 15 दिनों तक नियमित आवृत्ति। 5. प्रतिदिन 1 घण्टे आवृत्ति, गुरुजी के सम्मुख। 6. पाणिनीय शिक्षा एक पक्ष में 10 श्लोकों का पाठ एवं कण्ठस्थीकरण।
2	द्वितीय	भोजनविधि, अभिवादन, यज्ञोपवीत धारण विधि (गोत्र, प्रवर (ऋषि), शाखा सूत्र इत्यादि)		10	
3	तृतीय	स्वादिष्टया से सना च सोम	30	10	
4	चतुर्थ	सना च सोम से एते सोमा अभि	39	10	
5	पञ्चम	एते सोमा अभि से सोमः पुनानो	45	10	
6	षष्ठ	सोमः पुनानो से यत् सोम चित्रमुक्थ्यम्	48	10	
7	सप्तम	यत् सोम चित्रं से एष कविरभिष्टुतः	54	10	
8	अष्टम	एष कविरभिष्टुतः से आ नः पवस्व धारया	48	10	
9	नवम	आ नः पवस्व से प्रण इन्दो महेतने	54	10	
10	दशम	पाणिनीय शिक्षा (मूलमात्र)	60 श्लोक		
नोट - कण्ठस्थीकरण, उच्चारण एवं स्वरसंचालन प्रत्येक की 100-100 अंकों की इस प्रकार 300 अंकों की परीक्षा होगी।			318 मन्त्र	100 अंक	

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

ऋग्वेद शाकल शाखा पाठ्यक्रम

वेदभूषण द्वितीयवर्ष (प्रथमा द्वितीयवर्ष / कक्षा VII समकक्ष)				
लगध ज्योतिषम् (मूलमात्र)				
ऋग्वेद संहिता	अष्टक	अध्याय	वर्ग	मन्त्र
	7 1	1, 2 (18 वर्ग पर्यन्त) 1 से 6	261	1348

क्रमांक	माह / पक्ष	पाठ्यक्रम बिन्दु	मन्त्र संख्या	अंक	अध्ययन-अध्यापन
1	प्रथम	प्र ण इन्दो से पवमानो अजीजनत्	95	10	ऋग्वेद में प्रान्ताऽनुसार दो अलग-अलग अध्ययन अध्यापन पद्धतियाँ है। (प्रान्ताऽनुसार अनुसरण करें।) 1. 10 पाठ, 10 वल्लि/ दशावृत्ति/ सन्था 2. 4 पाद सन्था 4 अर्धऋक् सन्था 4 मन्त्र सन्था 4 वर्ग सन्था (गुण्डिका) 3. वल्लि/दशावृत्ति/सन्था सम्पूर्ण होने के पश्चात गुरुजी के सम्मुख (एकावृत्ति) कण्ठस्थ बोले। 4. नये पाठ की (जिसकी वल्लि/दशावृत्ति/ सन्था पूरी हुई हो।) एक वर्ग को 2-2 बार बोलते हुए 15 दिनों तक नियमित आवृत्ति। 5. प्रतिदिन 2 घण्टे आवृत्ति, (गतवर्ष में पठित सभी अंशों की आवृत्ति अनिवार्य है।) गुरुजी के सम्मुख। 6. लगध ज्योतिषम् एक पक्ष में 5 श्लोक।
2	द्वितीय	पवमानो अजीजनत् से हिन्वन्ति सूरमुस्रयः	105	10	
3	तृतीय	हिन्वन्ति सूरमुस्रयः से प्र देवमच्छा	92	10	
4	चतुर्थ	अग्निमीळे से अयं देवाय	194	10	
5	पञ्चम	अयं देवाय से एतायामोप	185	10	
6	षष्ठ	एतायामोप से अयं वां मधुमत्तमः	173	10	
7	सप्तम	अयं वां से प्र मन्महे शवसानाय	152	10	
8	अष्टम	प्र मन्महे से इन्द्रो मदाय	185	10	
9	नवम	इन्द्रो मदाय से द्वे विरूपे	163	10	
10	दशम	लगध ज्योतिषम् (मूलमात्र)		10	
नोट - कण्ठस्थीकरण, उच्चारण एवं स्वरसंचालन प्रत्येक की 100-100 अंकों की इस प्रकार 300 अंकों की परीक्षा होगी।			1348 मन्त्र	100 अंक	

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

ऋग्वेद शाकल शाखा पाठ्यक्रम

वेदभूषण तृतीयवर्ष (प्रथमा तृतीयवर्ष / कक्षा VIII समकक्ष)					
पिङ्गलछन्द (मूलमात्र)					
ऋग्वेद संहिता	अष्टक	अध्याय	वर्ग	मन्त्र	
	1 2	7, 8 1 से 8	279	1461	

क्रमांक	माह / पक्ष	पाठ्यक्रम बिन्दु	मन्त्र संख्या	अंक	अध्ययन-अध्यापन
1	प्रथम	द्वे विरूपे से इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां	179	9	ऋग्वेद में प्रान्ताऽनुसार दो अलग-अलग अध्ययन अध्यापन पद्धतियाँ है। (प्रान्ताऽनुसार अनुसरण करें।) 1. 10 पाठ, 10 वल्लि/ दशावृत्ति/ सन्था 2. 4 पाद सन्था 4 अर्धऋक् सन्था 4 मन्त्र सन्था 4 वर्ग सन्था (गुण्डिका) 3. वल्लि/दशावृत्ति/सन्था सम्पूर्ण होने के पश्चात गुरुजी के सम्मुख (एकावृत्ति) कण्ठस्थ बोले। 4. नये पाठ की (जिसकी वल्लि/दशावृत्ति/ सन्था पूरी हुई हो।) एक वर्ग को 2-2 बार बोलते हुए 15 दिनों तक नियमित आवृत्ति। 5. प्रतिदिन 5 अध्यायों की आवृत्ति, (गतवर्ष में पठित सभी अंशों की आवृत्ति अनिवार्य है।) । 6. पिङ्गलछन्दस् प्रतिदिन 20 मिनट।
2	द्वितीय	इदं श्रेष्ठं से प्र व: पान्तं रघुमन्यवः	135	9	
3	तृतीय	प्र व: पान्तं से सुषुमा यातमद्रिभिः	137	9	
4	चतुर्थ	सुषुमा से वसू रुद्रा पुरुमन्तू	143	9	
5	पञ्चम	वसू रुद्रा से तन्नु वोचाम रभसाय	132	9	
6	षष्ठ	तन्नुवोचाम से ता वा मद्य तावपरं	142	9	
7	सप्तम	ता वा मद्य से नि होता होतृषदने	159	9	
8	अष्टम	नि होतासे सेमामविड्डि प्रभृतिं	157	9	
9	नवम	सेमामविड्डि से मन्दस्व होत्रादनु	137	9	
10	दशम	मन्दस्वहोत्रा से प्रय आरु: शितिपृष्ठस्य	140	9	
11		पिङ्गलछन्द (मूलमात्र)		10	
नोट - कण्ठस्थीकरण, उच्चारण एवं स्वरसंचालन प्रत्येक की 100-100 अंकों की इस प्रकार 300 अंकों की परीक्षा होगी।			1461 मन्त्र	100 अंक	

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

ऋग्वेद शाकल शाखा पाठ्यक्रम

वेदभूषण चतुर्थवर्ष (पूर्वमध्यमा प्रथमवर्ष / कक्षा IX समकक्ष)

निघण्टु प्रथम एवं द्वितीयाध्याय

ऋग्वेद संहिता	अष्टक	अध्याय	वर्ग	मन्त्र
	3 4	1 से 8 1 से 3	317	1687

क्रमांक	माह / पक्ष	पाठ्यक्रम बिन्दु	मन्त्र संख्या	अंक	अध्ययन-अध्यापन
1	प्रथम	प्र य आरुः से इच्छन्ति त्वा	176	9	ऋग्वेद में प्रान्ताऽनुसार दो अलग-अलग अध्ययन अध्यापन पद्धतियाँ है। (प्रान्ताऽनुसार अनुसरण करें।) 1. 10 पाठ, 10 वल्लि/ दशावृत्ति/ सन्था 2. 4 पाद सन्था 4 अर्धऋक् सन्था 4 मन्त्र सन्था 4 वर्ग सन्था (गुण्डिका) 3. वल्लि/दशावृत्ति/सन्था सम्पूर्ण होने के पश्चात गुरुजी के सम्मुख (एकावृत्ति) कण्ठस्थ बोले। 4. नये पाठ की (जिसकी वल्लि/दशावृत्ति/ सन्था पूरी हुई हो।) एक वर्ग को 2-2 बार बोलते हुए 15 दिनों तक नियमित आवृत्ति। 5. प्रतिदिन 6 अध्यायों की आवृत्ति, (गतवर्ष में पठित सभी अंशों की आवृत्ति अनिवार्य है।) । 6. निघण्टु प्रतिदिन 30 मिनट अध्ययन।
2	द्वितीय	इच्छन्ति त्वा से इन्द्र त्वा वृषभं इन्द्र त्वा वृषभं से धानावन्तं करम्भिणं	137 82	9	
3	तृतीय	धानावन्तं करम्भिणं से न ता मिनन्ति न ता मिनन्ति से वैश्वानराय मी∞हुषे	76 135	9	
4	चतुर्थ	वैश्वानराय से एवात्वामिन्द्र	148	9	
5	पञ्चम	एवात्वा से प्र ऋभुभ्यो	159	9	
6	षष्ठ	प्र ऋभुभ्यो से इदमु त्यत् पुरुतमं	144	9	
7	सप्तम	इदमु त्यत् से त्वामग्ने हविष्मन्तः	152	9	
8	अष्टम	त्वामग्ने से महि महे तवसे	168	9	
9	नवम	महि महे से प्रयुञ्जती दिव एति	146	9	
10	दशम	प्रयुञ्जती से ऋतस्य गोपा	164	9	
11		निघण्टु प्रथम एवं द्वितीयाध्याय		10	
नोट - कण्ठस्थीकरण, उच्चारण एवं स्वरसंचालन प्रत्येक की 100-100 अंकों की इस प्रकार 300 अंकों की परीक्षा होगी।			1687 मन्त्र	100 अंक	

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

ऋग्वेद शाकल शाखा पाठ्यक्रम

वेदभूषण पञ्चमवर्ष (पूर्वमध्यमा द्वितीयवर्ष / कक्षा X समकक्ष)				
निघण्टु 3, 4 एवं 5 अध्याय				
ऋग्वेद संहिता	अष्टक	अध्याय	वर्ग	मन्त्र
	4 5	4 से 8 1 से 8	396	2074

क्रमांक	माह / पक्ष	पाठ्यक्रम बिन्दु	मन्त्र संख्या	अंक	अध्ययन-अध्यापन
1	प्रथम	ऋतस्य गोपा से त्वं हि क्षैतवद्यशः	177	9	ऋग्वेद में प्रान्ताऽनुसार दो अलग-अलग अध्ययन अध्यापन पद्धतियाँ है। (प्रान्ताऽनुसार अनुसरण करें।) 1. 10 पाठ, 10 वल्लि/ दशावृत्ति/ सन्था 2. 4 पाद सन्था 4 अर्धऋक् सन्था 4 मन्त्र सन्था 4 वर्ग सन्था (गुण्डिका) 3. वल्लि/दशावृत्ति/सन्था सम्पूर्ण होने के पश्चात गुरुजी के सम्मुख (एकावृत्ति) कण्ठस्थ बोले। 4. नये पाठ की (जिसकी वल्लि/दशावृत्ति/ सन्था पूरी हुई हो।) एक वर्ग को 2-2 बार बोलते हुए 15 दिनों तक नियमित आवृत्ति। 5. प्रतिदिन 7 अध्यायों की आवृत्ति, (गतवर्ष में पठित सभी अंशों की आवृत्ति अनिवार्य है।) । 6. निघण्टु प्रतिदिन 30 मिनट अध्ययन।
2	द्वितीय	त्वं हि क्षैतवद्यशः से पिबा सोममभि पिबा सोममभि से य एक इद्व्यश्चर्षणीनाम्	160 68	9	
3	तृतीय	य एक इत् से इन्द्रं वो नरः सख्याय इन्द्रं वो नरः से यज्ञायज्ञा वो	64 176	9	
4	चतुर्थ	यज्ञायज्ञा से स्तुषेनरा दिवः स्तुषेनरा से घृतवती भुवनानामाभिश्रियः	166 75	9	
5	पञ्चम	घृतवती भुवनानां से जुषस्व नः समिधमग्ने जुषस्व नः से उग्रो जज्ञे वीर्याय	68 156	9	
6	षष्ठ	उग्रो जज्ञे से प्र बह्मैतु	165	9	
7	सप्तम	प्र ब्रह्मैतु से यदद्य सूर्य यदद्य सूर्य से आ शुभ्रा यातमश्विना	156 70	9	
8	अष्टम	आ शुभ्रा यातमश्विना से प्रत्यु अदर्श्यायति प्रत्यु आदर्श्यायति से तिस्रो वाचः प्र वद	80 145	9	
9	नवम	तिस्रो वाचः से दूरादिहेव यत्	165	9	
10	दशम	दूरादिहेव से य इन्द्र सोमपातमः	183	9	
11		निघण्टु 3, 4 एवं 5 अध्याय		10	
नोट - कण्ठस्थीकरण, उच्चारण एवं स्वरसंचालन प्रत्येक की 100-100 अंकों की इस प्रकार 300 अंकों की परीक्षा होगी।			2074 मन्त्र	100 अंक	